रविवार विशेष

आयुध निर्माण

# आत्मनिर्भरता

## राष्ट्र रक्षा का संकल्प

आयुध निर्माण भारत के लिए नया नहीं है, लेकिन इसकी रफ्तार अपेक्षा के अनुरूप नहीं रही। कुछ वर्ष पहले तक हम छोटी-छोटी आयुध सामग्री के लिए आयात पर निर्भर थे, लेकिन अब स्थितियां बदल गई हैं। आज देश न केवल अपनी जरूरतें पूरी कर रहा है, बल्कि निर्यात भी कर रहा है। भारत में बनी तोप, मिसाइलें, राकेट लांचर की मांग दुनियाभर में है। नई युद्ध तकनीकों के निर्माण में भी सरकारी उपक्रम के साथ निजी क्षेत्र बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। 18 मार्च को आयुध निर्माण दिवस है। इस बार रविवार विशेष में पढ़ें कि इस क्षेत्र में देश कैसे आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ा रहा है।

# कानपुर की आयुध निर्माणियां सेना को बना रही स्वावलंबी

सैन्य रक्षा बलों को मजबूती देने के लिए कानपुर की आयुध निर्माणियों ने अब तक अहम भूमिका निभाई है। एक समय सेना की आर्टिलरी रेजिमेंट को आयातित हथियारों पर निर्भर रहना पड़ता था। पिछले दस वर्षों में आयुध निर्माणी खुद के अनुसंधान व विकास के बूते आत्मनिर्भर हुई हैं। तीन साल पूर्व आयुध निर्माणियों का निगमीकरण हुआ। यहां अब पहले से ज्यादा उन्नत हथियार व तोपों का निर्माण हो रहा है। लघु शस्त्र निर्माणी, फील्ड गन फैक्ट्री और आयुध फैक्ट्री कानपुर ने अचूक निशाना लगाने वाले स्वदेशी हथियार बनाए हैं तो आयुध उपस्कर निर्माणी ने रक्षाबलों के लिए आवश्यक कई उत्पाद निर्मित किए हैं। कानपुर अब डिफेंस हब बनने के लिए तैयार है। निगमीकरण के बाद बनीं ट्रूप कम्फर्ट्स लिमिटेड, एडवांस वेपन्स एंड इक्विपमेंट इंडिया लिमिटेड और ग्लाइडर्स इंडिया लिमिटेड के अधीन आयुध निर्माणियों के इंजीनियर हथियारों को उन्नत बनाने में जुटे हैं। वैश्विक रक्षा क्षेत्र में भारत में निर्मित हथियारों की मांग बढ़ रही है।

### सेना को भा रहे ओईएफ के उत्पाद

कारबाइन और एके 56 की गोली से जवानों को सुरक्षित रखने वाली ओईएफ में बनी बुलेट प्रूफ जैकेट देश के अर्द्धसैनिक सहित अन्य सुरक्षा बल में काफी पसंद की गई है। 9.5 किग्रा की जैकेट में लगी सापट और हार्ड आर्म प्लेटें जवानों को सुरक्षित रखती हैं। ओईएफ में सैन्य रक्षा उत्पादों में हल्के वजन का स्टील का आर्मी क्रैम्पन बूट बनाया है। इसे पहनकर जवान माइनस 50 डिग्री के तापमान पर भी सुरक्षित रह सकेंगे। वाटर प्रूफ टेंट, ग्लेशियर टेंट जैसे सैन्य रक्षा उत्पाद बन रहे हैं।

### आइआइटी भी कर रहा समृद्ध

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर रक्षा क्षेत्र में लगातार शोध और नवाचार कर रहा है। यहां के टेक्नोपार्क में डिफेंस टेस्टिंग इंफ्रास्ट्रक्चर स्कीम के तहत उन्नत यूएएस और कम्युनिकेशन टेस्टिंग फैसिलिटी स्थापित होगी, इसके लिए दो संस्थाओं के साथ आइआइटी का एमओयू हो चुका है। संस्थान के विज्ञानियों ने स्वचालित ड्रोन लांचर तैयार किया है जो सौ किमी तक तबाही बरसा सकता है। मैकेनिकल डिपार्टमेंट की टीम ने चार टांगों वाले 'स्वान एम2' रोबोट में उच्च दृश्यता वाले कैमरा और एआइ तकनीक का प्रयोग किया है।

### सारंग तोप को किया उन्नत, आइएफजी से भी सशक्त हुई भारतीय सेना

फील्ड गन फैक्ट्री ने इंडियन फील्ड गन (आइएफजी) की सफलतापूर्वक ओवरहालिंग की है। आइएफजी 10 से 15 साल तक युद्ध क्षेत्र में अपना बेहतर प्रदर्शन देने में सक्षम बनी है। ओएफसी में निर्मित सारंग तोप सेना को अचूक प्रहार की ताकत दे रही है। सेना को 54 से ज्यादा सारंग तोपें दी जा चुकी हैं। 20 साल पुरानी 130 मिमी कैलिबर की कैरिज गन को उन्नत बनाने में ओएफसी ने सफलता पाई। यह उन्नत होकर 155 मिमी कैलिबर सारंग के रूप में सेना को मिली। यह 38 किमी तक अचूक निशाना लगा सकती है। ओएफसी ने स्वदेशी पिनाक गाइडेड मल्टी बैरल राकेट लांचर का दिल यानी स्टेबलाइजर उपकरण भी बनाया है।

### हथियारों के लिए देश-विदेश से मिले 7,765 करोड़ के आर्डर

एडवांस वेपंस एंड इक्विपमेंट इंडिया लिमिटेड को धनुष, सारंग तोप, इंडियन फील्ड गन, प्रबल और प्रहार जैसी अन्य रिवाल्वर व मध्यम श्रेणी में कारबाइन, राइफल, मैग गन, जेवीपीसी हथियार के लिए देश व विदेश से छह हजार करोड़ रुपये के आर्डर मिले हैं। यूरोपीय देशों से भी 450 करोड़ रुपये के हथियारों के निर्यात का आर्डर मिला है। ग्लाइडर्स इंडिया लिमिटेड कंपनी, ड्रोन रिकवरी पैराशूट, सुखोई, जगुआर युद्धक विमानों के लिए गुणवत्तायुक्त पैराशूट बना रही है। सेना से 300 करोड़ का हैवी ड्राप पैराशूट सिस्टम बनाने का आर्डर मिला है।

### स्वदेशी पैराशूट पर शोध करके उन्नत बना रहे इंजीनियर

आयुध पैराशूट निर्माणी (ओपीएफ) में बन रहे वैश्विक मानकों पर खरे पैराशूट की एशियाई और अफ्रीकन देशों से खूब मांग आ रही है। ओपीएफ मलेशिया को सुखोई-30 लड़ाकू विमान के लिए ब्रेक पैराशूट निर्यात कर चुका है। अब केन्या व इंडोनेशिया को पैराशूट निर्यात करने की तैयारी है। ओपीएफ में ब्रेक पैराशूट हाक के माडल, एस बी पैराशूट, ड्रोन रेस्क्यू पैराशूट, बोट जैमिनी क्राफ्ट्स भी बनते हैं।

### अदाणी ग्रुप की आयुध फैक्ट्री में भी उत्पादन शुरू

डिफेंस कारीडोर के कानपुर नोड अदाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस कंपनी हजारों करोड़ रुपये का निवेश कर रही है। समूह की 500 एकड़ में फैली आयुध फैक्ट्री में 2025 में दो अरब कारतूस बनेंगे। इसके साथ ही अब यहां तोप के गोलों, गोलियों और ड्रोन का उत्पादन होगा।

(कानपुर से विवेक मिश्रा)

### 35,000 करोड़ के हथियारों को निर्यात करने का लक्ष्य

कोलकाता स्थित रक्षा मंत्रालय के अधीन आयुध निर्माणी बोर्ड आत्मनिर्भरता के साथ हथियारों के निर्यात में आगे बढ़ रहा है। वित्त वर्ष 2024-25 में इसने 1.75 लाख करोड़ का उत्पादन का लक्ष्य और 35,000 करोड़ रुपये का निर्यात लक्ष्य रखा है। ओएफबी से मिले आंकड़ों के मुताबिक 2023-24 में इसने 21,083 करोड़ रुपये का रक्षा निर्यात किया था। आयुध कारखाने रक्षा हार्डवेयर और उपकरणों के स्वदेशी उत्पादन के लिए एक एकीकृत आधार बनाते हैं, जिसका प्राथमिक उद्देश्य सशस्त्र बलों को अत्याधुनिक युद्धक्षेत्र उपकरणों से लैस करने में आत्मनिर्भरता है। ओएफबी में 41 कारखाने, नौ प्रशिक्षण संस्थान, तीन क्षेत्रीय विपणन केंद्र और चार क्षेत्रीय सुरक्षा नियंत्रक शामिल हैं। कोलकाता स्थित आयुध कारखाने भी इन्हीं में शामिल हैं।

(कोलकाता से इंद्रजीत सिंह)